कोटि विधि स्पष्टत: इन अन्तरों का कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

(ii) कोटि विधि (ranking method) का प्रयोग वहीं अधिक उपयुक्त होता है जब बालकों या छात्रों की संख्या कम हो। इनकी संख्या अधिक होने से कोटि विधि के प्रयोग में काफी अधिक कठिनाई बढ़ जाती है।

इन परिसीमाओं के (limitation) के बावजूद, कोटि विधि का प्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान में कुछ खास परिस्थितियों में विशेष कर शिक्षार्थियों या बालकों के अव्यक्त शीलगुणों (implicit traits) के अध्ययन में काफी किया जाता है।

- केस - इतिहास विधि या नैदानिक विधि (case - history method or clinical method)

नैदानिक विधि एक ऐसी विधि है जिसका प्रयोग शिक्षा मनोवैज्ञानिक (educational psychologists) कुसमायोजित बालकों (maladjusted children) तथा विचलित बच्चों (deviant childre) की समस्याओं के अध्ययन में करते हैं। इस विधि द्वारा अपराधी बालकों की समस्याओं का भी विशिष्ट अध्ययन किया जाता है। कुछ शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने इस विधि का प्रयोग शिक्षार्थियों की संवेगात्मक समस्याओं (emotional problems) के अध्ययन में भी सफलतापूर्वक किया है। इस विधि में बालकों के समस्याओं का अध्ययन करने के लिए एक केस विवरण या इतिहास (case history method) भी कहा जाता है। इसमें अपराधी बालक या विचलित (deviant) बालक द्वारा पिछले

त्रुटि (error of leniency) जैसी भयानक त्रुटियाँ अपने-आप नियंत्रित रहती हैं क्योंकि शिक्षक को कुछ छात्रों या बालकों को उच्च कोटि, कुछ को निम्न कोटि तथा कुछ को मध्य कोटि (middle rank) की श्रेणी में रखना ही पड़ता है।

iii) कोटि विधि में एक फायदा यह बताया गया है कि इसमें शिक्षक या प्रेक्षक को प्रत्येक बालक को एक-दूसरे से विभेदित (discrimination) करते हुए श्रेणीकरण (Ranking) करना होता है, अतः उस विधि द्वारा शिक्षक को बालकों के बारे में सापेक्ष अन्तर (relative difference) का सही-सही ज्ञान हो पाता है और शिक्षक एक वैज्ञानिक एवं युक्तयुक्त (sound) निष्कर्ष पर पहुँचने में समर्थ हो जाते हैं।

इन गुणों के बावजूद कोटि विधि के कुछ अवगुण (demerits) हैं, जो निम्नांकित हैं —

i) कुछ शिक्षा मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि कोटि विधि (Ranking method) द्वारा बालकों या शिक्षार्थियों के शीलगुणों की आपसी भिन्नता के अन्तर पता नहीं चलता।

उदाहरणस्वरूप, यदि चार बालक द्वारा किसी बुद्धि परीक्षण (Intelligence test) पर प्राप्त प्राप्तांक (Score) जैसे 70, 60, 50, 30 को कोटि (Rank) में बदला जाए तो क्रमशः इसके कोटि (Rank) 1, 2, 3 तथा 4 होंगे। लेकिन, यहाँ स्पष्ट है कि कोटि 1 और 2 तथा 3 और 4 में अन्तर मात्र एक-एक का है परन्तु वास्तव में जिस बुद्धि प्राप्तांक को इन कोटियों द्वारा बताया जा रहा है, उनमें आपस में काफी अधिक अन्तर है।